॥ प्रेरणा स्रोत ॥

‘यथार्थ गीता’ के आकर्षण

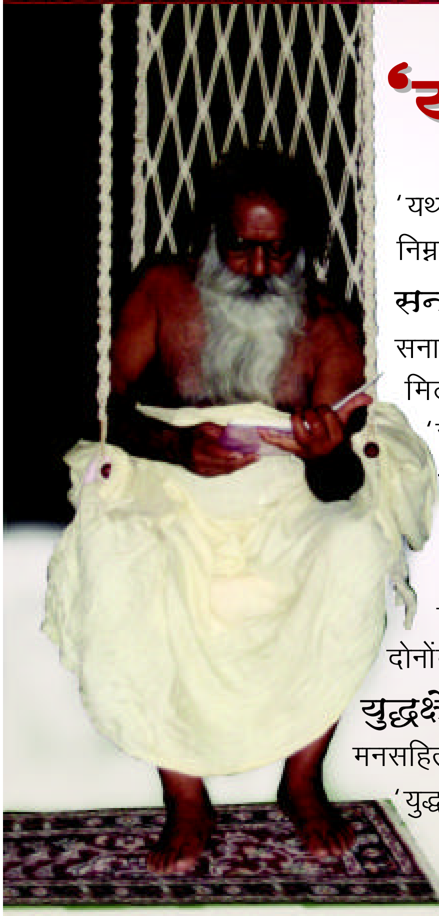

‘यथार्थ गीता’ के आकर्षण निम्नलिखित हैंः—

सनातन धर्म : परमात्मा सनातन है। परमात्मा से मिलानेवाली क्रिया ही ‘सनातनधर्म’है।

युद्ध : दैवीएवं आसुरी सम्पदाओं का संघर्ष ‘युद्ध’है,जोअन्तःकरण की दो प्रवृत्तियाँ हैं। इन दोनोंकामिटनापरिणामहै।

युद्धक्षेत्र : यह मानव शरीर, मनसहित इन्द्रियों का समूह ‘युद्धस्थल’है।

यज्ञ : साधना की विधि-विशेष का नाम ‘यज्ञ’ है, जो साधक कापरमात्मासेमेलकरातीहै।

कर्म : यज्ञ को कार्यरूप देना ‘कर्म’ है। यज्ञ के अतिरिक्त जोकुछभीकियाजाताहैवहइसीलोककाएकबन्धनहैन कि गीतोक्तकर्म।

योग : प्रकृति के द्वन्द्वों में फँसी हुई आत्मा का प्रकृति से परेपरमात्मासेमिलनकानाम‘योग’है।

शास्त्र : परमात्मा में प्रवेश दिलानेवाले क्रियात्मक अनुशासन केनियमों का संकलन ही शास्त्रहै।

धर्म : विश्व में धर्म एक ही है। शाश्वत एकमात्र परमात्मा है। उस परमात्मा कोप्राप्तकरानेवाली नियतविधिगीतोक्त यज्ञार्थ कर्मकाआचरणही धर्माचरण है। परमात्मा भी यदि दो हैं तो उनके लिए दूसरी सृष्टि चाहिए, उनके व्याप्त होने, रहने के लिए। क्योंकि भगवान् इस सृष्टि के कण-कण में व्याप्त है तो दूसरा आएगा तो निवास कहाँकरेगा?

ओम् : ओम् परमात्मा का परिचायक है, परमात्मा कानिर्देशकरताहै,स्मृतिदिलाताहै, संकेतकरता है।

अनुभव : जिस सतह पर हमखड़े हैं, उसी स्तर पर जब स्वयं प्रभु हृदय में उतर आयें, रोकथाम करने लगें, डगमगाने पर सम्भालें, तभी मन बस में हो पाता है। इसी संचालन का नामअनुभवहै।

प्रेरक : जब भगवान् कृपा करते हैं, आत्मा से रथी हो जाते हैं तो खम्भे से, वृक्ष से, शून्य से, हरस्थानसेबोलतेऔरसम्भालतेहैं।

कृपा : साधक की श्रद्धा ही कृपा बनकर उसे मिलतीहै।

भगवान् जब कृपा करते हैं तो शत्रु मित्र बन जाते हैं। विपत्ति सम्पत्ति बन जाती है। भगवान् सर्वत्र से देखते हैं। -स्वामी परमानन्द जी